श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा : पाँचो परमेष्टी नमूँ, चौबीसों तीर्थेश । मात शारदा को नमूँ, वन्दूँ सर्व गणेश ।। १ ।।
वासुपूज्य भगवान को, कोटि अनंत प्रणाम । प्रथम बालयति का पढूँ, चालीसा सुखधाम ।। २ ।।

❊ चौपाई ❊

जय-जय वासुपूज्य जिनदेवा, त्रिभुवन भव्य करें तुम सेवा । पूर्व भवों से प्रभु वैरागी,देव-शास्त्र-गुरु पद अनुरागी ॥१॥

जिन दर्शन अभिषेक करें वो, पूजन महाविधान करें वो । चार दान दें चार संघ को, निशदिन वैयावृत्ति करें वो ॥२॥

महा जिनालय बहुत बनाये, त्यागी भवन विशाल बनाये । जीर्ण तीर्थ उद्धार कराये, नये तीर्थ भी बहुत बनाये ॥३॥

भव्य पँचकल्याण कराये, जैन धर्म का ध्वज फहराये । श्रमणों का विहार कराते, मुनियों के संग पैदल जाते ॥४॥

मुनियों के आहार करायें, पँचाश्चर्य अनेकों पाये । महामांडलिक थे पद्मोत्तर, श्रद्धा आदिक गुण के आगर ॥५॥

गुरुवाणी बहुधा सुनते थें, जिनवाणी निशदिन पढते थे । तत्त्वों का चिंतन करते थे, श्रावक व्रत पालन करते थे ॥६॥

प्रभु को देख प्रजा हर्षाती, धर्म पुण्य कर नव सुख पाती । धर्म शील धारें नरनारी, भाग्यवान शिक्षित संस्कारी ॥७॥

शरण युगंधर जिन की पायी,जिन सन्मुख मुनि दीक्षा पायी । मुनि ग्यारह अंगों के ज्ञाता,घोर तपस्वी ध्यानी दाता ॥८॥

सोलह कारण श्रेष्ठ भावना, मुनिवर भाते दिव्य भावना। तीर्थंकर पद दिव्य वरें वो, धार समाधि स्वर्ग गये वो ॥ ९॥

महाशुक्र सुरपति पद पाया, सोलह सागर दिवसुख पाया । जम्बूद्वीप में खुशियाँ छायीं, भरत क्षेत्र में बजी बधाई ॥१०॥

अंगदेश सारा हर्षाया, चम्पापुर में उत्सव छाया । वसुपूज्य भूपति के नंदन, जयावती सुत का अभिनंदन ॥११॥

वासु इंद्र जिन्हें नित ध्यायें, वासुपूज्य जिनदेव कहायें । बारहवें तीर्थंकर देवा, पहले बालयति जिनदेवा ॥१२॥

पंचकल्याणक इंद्र मनाये, चम्पापुर पँचोत्सव पाये । रक्त वर्ण जिनदेव तुम्हारा, लक्ष्मी सुत सम्पत दातारा ॥१३॥

प्रभुवर जो तुम दर्शन पाता, अनंत अनशन का फल पाता । पंचामृत अभिषेक करें जो, मेरु पर अभिषेक वरे वो ॥१४॥

वासुपूज्य सुविधान कराओ, सब संकट से छुट्टी पाओ । भद्रबाहु गुरु हमें बतायें, प्रभु अंगारक दोष नशायें ॥१५॥

मंगल दोष महादु:खदायी, कर्ज कुकर्म कचहरी दायी । भाई-भाई में युद्ध कराता, पुत्र सौख्य में विघ्न बढाता ॥१६॥

नवग्रह शान्ति विधान रचायें,भूमि-सुत-सुख भौम दिलाये। सभी परीक्षा में यश आता,उच्च राज सुख सब दिलवाता ॥१७॥

विजयी सेनाध्यक्ष बनाता, धर्म-राष्ट्र नायक बनवाता । कर्ज मुक्ति देता सुख साता, मंगल मंगल कार्य कराता ॥१८॥

वासुपूज्य को जो नित ध्याता,सर्व रोग से मुक्ति पाता । मोक्षमार्ग में नित यश पाता,निष्कलंक जिनध्वज फहराता ॥१९॥

वासुपूज्य ! मेरे उर आओ, मेरा आस्था भाव बढाओ । वसुकर्मों से मुक्ति दिलाओ, "गुप्तिनंदी" को सिद्ध बनाओ ॥२०॥

सेठी नगर जिनालय न्यारा, वासुपूज्य दर्शन दु:खहारा । धर्मतीर्थ में महिमा भारी, वहाँ विराजे प्रभु सुखकारी ॥२१॥

❊ दोहा ❊

वासुपूज्य जिनराज का, चालीसा सुखकार । पढो सुनो अविराम सब, पाओ सौख्य अपार ।। १ ।। सर्वरोग दु:ख दुर हों, और पाप का नाश । बढे भाग्य सुख सम्पदा, बने धर्ममय श्वास ।। २ ।।

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नम:।।

रचना - आचार्य गुप्तदीनंदीजी

Design Workstation : 9823654452